Qn.– पूँजीवाद की परिभाषा दीजिए। इसके गुण-दोषों का वर्णन करें?

उत्तर

पूँजीवाद वह आर्थिक पद्धति है जिसमें उत्पत्ति के साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व होता है। प्राचीन काल में संसार के लगभग सभी देशों में आर्थिक व्यवस्था - संगठन पूँजीवाद आधार पर किया जाता था और आजकल फ्रांस, इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि विश्व के प्रमुख देशों में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था प्रचलित है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को परिभाषित करते हुए लॉक्स और हूट (Loucks and Hoot) ने लिखा है, "पूँजीवादी वह अर्थव्यवस्था है, जिसमें प्राकृतिक और मानवीयकृत पूँजी पर व्यक्तियों का निजी स्वामित्व होता है तथा इसका उपयोग वे अपने निजी लाभ हेतु करते हैं।"

("capatalism is a system of economic organisation trethered by the private ownership and the use for private profit of man-made and nature-made capital.")

प्रो० ए० सी० पीगू के शब्दों में, "पूँजीवादी अर्थव्यवस्था या पूँजीवादी पद्धति वह है जिसमें उत्पादक साधनों का मुख्य भाग पूँजीवादी उद्योगों में लगा हुआ है।"

प्रो० डी० मेकाइट के अनुसार, "पूँजीवाद वह व्यवस्था है जिसमें सामान्यतया आर्थिक क्रियाओं, विशेषत: नये विनियोजन का अधिकांश भाग निजी इकाईयों (जैसे गैर सरकारी) द्वारा लाभ की आशा से सक्रिय तथा वस्तुत: स्वतंत्र प्रतियोगिता की दशाओं में किया जाता है। पूँजीवाद के लक्षण इस प्रकार हैं:—

(i) निजी सम्पत्ति का अधिकार
(ii) आर्थिक स्वतंत्रता या स्वतंत्र व्यवसाय का अधिकार
(iii) लाभ का उद्देश्य
(iv) वर्ग संघर्ष
(v) मूल्य तंत्र
(vi) जोखिम के साथ नियंत्रण का सम्पर्क
(vii) आर्थिक असमानताएँ
(viii) साहसी का महत्वपूर्ण भाग
(ix) प्रतियोगिता
(x) धन की अत्यधिक बर्बादी
(xi) व्यापार चक्र

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

* पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के गुण :-

(a.) कुशलता तथा अपव्यय का निराकरण → इस अवस्था का प्रथम गुण यह है कि इसमें प्रत्येक साहसी यह सोचता है कि उत्पादन लागत न्यूनतम हो और लाभ अधिक हो। इसलिए वह जितने भी खर्च अनावश्यक होते है उनको दूर करता है जिसके कारण वस्तु का मूल्य तथा लागत निम्न स्तर पर रहता है।

(b.) स्वयं संचालित → इस प्रकार की व्यवस्था स्वयं संचालित होती है। इसमें अन्य किसी व्यक्ति को नियंत्रण रखने की आवश्यकता नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति स्वहित से प्रेरित होकर कार्य करता है।

(c.) जीवन-स्तर में सुधार → जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने में पूँजीवाद का मुख्य हाथ होता है, क्योंकि पूँजीवाद में अधिक मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन होता है। इस प्रकार लोगों को कम कीमत पर अच्छी वस्तुएँ उपलब्ध होती है।

(d.) पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन → इस प्रकार की व्यवस्था में पूँजीवाद लोगों को अधिक उत्पादन और आर्थिक परिश्रम के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। जिसके कारण लोग अत्यधिक मात्रा में बचत करते हैं और इस प्रकार पूँजी निर्माण में प्रोत्साहन करते है।

(e.) योग्यतानुसार पुरस्कार → इस प्रकार की व्यवस्था में जो साहसी अधिक जोखिम उठाता है उसे अधिक पुरस्कार प्राप्त होता है।

(f.) लोचपूर्ण तथा प्रायोगिक स्वभाव → पूँजीवाद में बहुत ज्यादा लोच होता है। समय और परिस्थिति के अनुसार यह स्वतंत्र बदलते रहते है।

(g.) तकनीकी प्रगति → इस व्यवस्था में लागत पर नियंत्रण करने के लिए तकनीकी ज्ञान का प्रयोग किया जा सकता है और हर संभव प्रयत्न जारी रखते है जिसमें उनको तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(h.) अधिकतम संतुष्टि → इस प्रकार की व्यवस्था में उपभोक्ता की अधिकतम संतुष्टि हो जाती है और उनकी पसंद, रुचि आदि के अनुसार वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

Scanned with CamScanner

* पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के प्रमुख दोष :—

(a) धन एवं आय के नियंत्रण में असमानतायें → पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का यह सबसे बड़ा दोष है कि इसमें आय का असमान वितरण होता है। एक ओर तो पूँजीपति और अधिक मात्रा में पूँजीपति बनते हैं और दूसरी ओर गरीब और गरीब होते जाते है, जिसके कारण समाज दो वर्गों में विभाजित हो जाता है- प्रथम सम्पन्न वर्ग और दूसरा गरीब वर्ग।

(b) वर्ग- संघर्ष → इन दोनों (सम्पन्न और गरीब) वर्गों के अलग-अलग हित होते है और इसलिए अपने हित को प्राप्त करने के लिए उनमें लगातार संघर्ष चलता रहता है।

(c) प्रतियोगिता में अपव्यय → पूँजीवाद में उद्योगपति अपनी वस्तु को प्रतियोगिता में स्थान दिलाने के लिए बड़े पैमाने पर व्यय करता है जो समाज के हित में नहीं होता है।

(d) क्षेत्रीय असमानतायें → पूँजीवाद आर्थिक असमानता को ही नहीं बल्कि क्षेत्रीय असमानता को भी जन्म देता है। उद्योगपति उसी स्थान पर कारखाने स्थापित करते है जहाँ लाभ की मात्रा अधिक होती है, ऐसी स्थिति में कुछ क्षेत्रों में उद्योगों का केन्द्रीयकरण होने लगता है और कुछ क्षेत्र पिछड़े रह जाते है, जिससे देश का असंतुलित विकास होता है।

(e) आर्थिक शोषण → पूँजीपतियों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है और लाभ कमाने के लिए वे अनुचित तरीकों से जनता का शोषण करते हैं।

(f) बेरोजगार, असुरक्षा तथा शोषण → श्रमिकों को बेरोजगारी के डर से मुट्ठी भर लोगों (साहसी) के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है और उन्हें कभी भी निकाल देते है, इससे उनमें बेरोजगारी बढ़ती है।

(g) एकाधिकार प्रवृत्तियाँ → पूँजीवाद में उत्पादक लोग मिलकर औद्योगिक संघ का निर्माण कर लेते है जिससे एकाधिकार स्थापित होने लगता है और प्रतियोगिता नाम मात्र की रह जाती है।

Scanned with CamScanner